शिक्षकों को आपस में
अकादमिक चर्चाओं
में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- जनवरी २०२४
नवम वर्ष अंक- 08

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

किसी भी विद्यालय की श्रेष्ठता मुखिया के कार्य शैली पर निर्भर करती है, आपने अनुभव किया होगा कि राज्य में कुछ ऐसे विद्यालय है जहां के कार्यों की चर्चा शिक्षा जगत के अलावा जन समुदाय में होती है। पालक भी ऐसे विद्यालय में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए तत्पर रहते हैं । चर्चा पत्र के इस विशेषांक में हम ऐसे ही विद्यालय के संस्था प्रमुखों के कार्यों को स्थान दे रहे हो जो अपने कुशल नेतृत्व क्षमता से विद्यार्थियों के चहुमुखी विकास हेतु अनुकरणीय प्रयास कर रहे हैं।

एजेंडा 1. स्कूल काम्प्लेक्स को मूर्त रूप देना

सनातनी परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक सोच देने का कार्य

श्रीमती डॉ. भावना तिवारी 9229265528
संकुल प्राचार्य मायाराम सुरजन
शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चौबेकलोनी रायपुर

मकान की मजबूती की कल्पना उसकी नींव के आधार पर की जाती है। टिकाऊ बहुमंजिला इमारत तैयार करने के लिए नींव का मजबूत होना आवश्यक है। उसी तरह से प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ पढ़ने लिखने की गतिविधि को ठीक से किया जाए तो वे एक स्वतंत्र पाठक बनते हैं। ऐसे ही सकारात्मक सोच पर काम करने वाली मायाराम सुरजन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चौबेकलोनी रायपुर की

प्राचार्या श्रीमती भावना तिवारी है। इनका मानना है शासन प्रशासन नियम बनाती है उसे मूर्त रूप देने का काम निचले अमले का होता है। हमारी संस्था में पूर्व माध्यमिक स्तर पर सहशिक्षा व सेकेंडरी स्तर पर बालिका शिक्षा संचालित है। जब इस विद्यालय में मुझे बतौर प्राचार्य के पद पर कार्य करने का अवसर मिला, तो मैंने देखा राजधानी जैसे स्थान पर बड़े कैम्पस वाले विद्यालय में बच्चों के सीखने के लिए आधारभूत

सुविधाओं का अभाव है। शाला में पर्याप्त शिक्षक होने के बाद भी परीक्षा परिणाम अपेक्षाकृत कम है। शिक्षकों से इस संबंध में चर्चा करने पर पाया कि निचली कक्षा में बच्चे सीख कर नही आते है । खराब परिणाम की जवाबदारी उनकी नही है। बस इसी बात को ध्यान में रख कर मैंने परीक्षा परिणाम को बेहतर करने के लिए टारगेट तय किया। सबसे पहले समग्र शिक्षा के स्कूल काम्प्लेक्स की अवधारणा को समझ कर उसे अमल में लाने हेतु कार्य प्रारंभ किया। विद्यालय में कक्षा पहली से बारहवीं के बच्चे अध्ययन करते हैं। प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक शाला के प्रधान पाठक, शिक्षकों के साथ सेकेंडरी के समस्त शिक्षकों का संयुक्त बैठक कर बच्चों के परिणाम सुधार के लिए कार्य योजना बनाकर कार्य प्रारंभ किया। सम्पूर्ण शाला को एक इकाई मानते हुए शिक्षकों को बेहतर कार्य एवं अनुभव के आधार पर गणित, विज्ञान, अंग्रेजी विषय में बच्चों की सही समझ विकसित कराने हेतु व्याख्याताओं को मिडिल क्लास तथा पूर्व माध्यमिक के शिक्षकों को प्राथमिक कक्षा में अध्यापन की जिम्मेदारी दी। साप्ताहिक बैठक लेकर समीक्षा कर, बच्चों का नियमित इकाई टेस्ट प्रारंभ किया। परिणामस्वरूप बच्चों के सीखने व शिक्षकों के कार्य करने की गति में गुणात्मक सुधार होने लगा। शिक्षकों को उनकी शैक्षिक अभिरुचि अनुसार कार्य करने की अनुमति देकर उनकी क्षमताओं का पूरा लाभ बच्चों को मिल सके ऐसा प्रयास किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में किये गए प्रावधान अनुसार बच्चों के सहसंज्ञानात्मक कौशल विकास के लिए साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेल एवं वैज्ञानिक अभिरुचि विकसित करने हेतु क्लब का गठन कर प्रत्येक बच्चों को उनकी रुचि अनुसार किसी न किसी क्लब का सदस्य बनाकर उनकी सक्रिय भागीदारी का अवसर उपलब्ध कराया।

शाला विकास के लिए शासन द्वारा उपलब्ध कराए गए राशि का समुचित उपयोग कर शाला परिसर में आकर्षक शैक्षिक वातावरण तैयार कर पढ़ने का माहौल तैयार किया। बच्चों को सीखने पढ़ने के लिए विद्यालय में आधुनिक पुस्तकालय तैयार की, वेस्ट समानों को उपयोगी शैक्षिक सामग्री बनाकर जय जुगड़ा गार्डन में स्थान दिया। सनातनी परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक सोच बच्चों में विकसित करने के लिए टी एल एम संग्रहालय बनाया। प्रत्येक कक्षा में रीडिंग कार्नर स्मार्ट क्लास की व्यवस्था की। विद्यालय में व्यवसायिक शिक्षा के अंर्तगत विभिन्न ट्रेड में बच्चों को जीवनुपयोगी स्किल सिखाई जाती है। सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधि के आयोजन हेतु शाला में भव्य ऑडिटोरियम होने से बच्चों का अभिव्यक्ति कौशल का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। इस तरह से बच्चों व शिक्षकों के सम्मलित प्रयास से हमारी संस्था का परिणाम पूर्व की अपेक्षा बहुत ही बेहतर हुआ है। पढ़ाई के साथ साथ विद्यालय के बच्चे राज्य एवं राष्ट्रीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता में शामिल हो कर मेडल प्राप्त कर रहे हैं। विद्यालय में बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देकर उन्हें संबल बनाने का अवसर प्रदान किया जाता है। विद्यालय के विद्यार्थियों को ऐसे ही कुछ नवाचारी, अनुकरणीय कार्य के माध्यम से एक अनुशासित, सक्षम, आत्मनिर्भर नागरिक बनाने प्रयास जारी है।

एजेंडा 2. आदिवासी अंचल की असरकारी शाला

पिता के विरासत को बेटी ने बढ़ाया

श्रीमती संध्या साहू 7587222127 प्रधान पाठक,
शासकीय प्राथमिक शाला पंचाल फड़की, विकासखंड मानपुर,
जिला मोहला मानपुर अंबागढ़चौकी

शिक्षिका का मानना है सूरत नही शिरत बदलनी चाहिये मानो तो विद्यालय एक मंदिर है। बच्चे इसके देव है हम सबको मिलकर इसकी सेवा करने से मेवा जरूर मिलता है। शिक्षिका संध्या साहू ने आज से लगभग सोलह साल पहले आदिवासी बाहुल्य गाँव पंचाल फड़की की प्राथमिक शाला में बतौर सहायक शिक्षिका के पद पर अपने कर्तव्य पथ की शुरुआत की। जहाँ गरीबी, अज्ञानता, अशिक्षा रूढ़िवादी का अंधियारा व्याप्त था। शिक्षा रूपी प्रकाश से ग्रामीण कोशों दूर थे। ऐसे ग्रामीण बच्चों के साथ काम करना शिक्षिका के लिए कोई चुनौती से कम नही था। शिक्षक परिवार से तलूक रखने वाली शिक्षिका ने परिवार व पिता को शिक्षा के प्रति समर्पित भाव से काम करते हुए बहुत करीब से देखा था। ऐसे विपरीत चुनौती भरे परिस्थिति में पिता के विरासत को आगे बढ़ने के लिए संध्या ने संकल्प लिया कि मुझे इनके व्यवहार को बदल कर शिक्षा का दीप प्रज्वलित करना है। प्रारंभिक दिनों में उन्होंने देखा कि बच्चे स्कूल नही आते है खेती मजदूरी या घरेलू कार्य में लगे होते है। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने ग्राम की महिलाओं के साथ मिलकर, पढ़ना उनके लिए कितना जरूरी है का अहसास कराया। घर व खेतों में जाकर पालकों से सम्पर्क की। शाला से पालकों को जोड़ कर नियमित पाक्षिक बैठक का आयोजन किया एवं अनुपस्थित बच्चों को शाला तक लाने के लिए उनका आवश्यक सहयोग लेकर अपने काम की शुरुआत की।

शिक्षिका ने बताया कि शुरू के दिन में बच्चे स्नान तो दूर बिना दातुन ब्रस के मैला कुचैला कुछ भी कपड़े पहन कर शाला आते थे। वे बच्चों को स्वयं अपने हाथों से साबुन लगाकर स्नान कराया दैनिक दातुन ब्रस करने का आदत डालकर व्यक्तिगत स्वच्छता सिखाई। उन्हें पढ़ाई के साथ उनके दैनिक आवश्यकता की सामग्री उपलब्ध कराकर शाला से जोड़ पाई। सामाजिक वातावरण सीख सके इसके लिए बच्चों व माताओं को गांव से बाहर आस पास के शहर का भ्रमण कराया। पूर्व व्यवसायिक शिक्षा के ध्येय की पूर्ति एवं मध्यान्ह भोजन में बच्चों को पौष्टिक सब्जी मिल सके, इसके लिए बच्चों के साथ मिलकर शाला परिसर के किचन गार्डन में सब्जी उगाकर मध्यान्ह भोजन समूह को उपलब्ध कराया है। आर्थिक समृद्धि सिखाने हेतु बच्चों के साथ मिलकर शाला परिसर में लगे वनोपजों को संग्रहित कर बाजार में बेंचा व शाला के लिए आवश्यक संसाधन जुटाया। शाला में शैक्षिक वातावरण तैयार करने हेतु प्रिंट रिच वातावरण तैयार करने के लिए बच्चों के साथ मिलकर स्वयं चित्रकारी किया है। शिक्षिका ने बताया कि एक दिन वह बच्चों को कम्प्यूटर पाठ

पढ़ाया तो बच्चे कम्प्यूटर देखना का जिद करने लगे। इस हेतु वे कुछ लोगों के सहयोग व स्वयं के व्यय से शाला के लिए एक कम्प्यूटर खरीदा। शहर से दूर आदिवासी बाहुल्य गाँव में बच्चे अब कम्प्यूटर चलाते हैं। शाला परिसर में आकर्षक बागवानी है। पढ़ाई के साथ साथ बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेल कूद में बढ़ चढ़ कर भाग लेते है। श्रीमती साहू विगत दो वर्ष से इस संस्था में प्रधान पाठिका है उनकी एक सहयोगी शिक्षिका है। दोनों मिलकर बच्चों के उत्तरोत्तर गुणवत्ता सुधार के लिए कार्य कर रहे हैं। श्रीमती साहू मानती है कि जो भी काम आपको मिला है यदि पूरी ईमानदारी, लगन निष्ठा से करेंगे तो सफलता निश्चित मिलती है। शायद यही कारण है कि आस पास के विद्यालय के शिक्षक हमारी शाला का अवलोकन करने आते हैं और जब वे हमारे स्कूल को सरकारी नही असरकारी स्कूल कहते है तो हमें बहुत संतुष्टि एवं आगे और बेहतर करने के लिए प्रेरणा मिलती है।

एजेंडा 3. शाला में घर जैसा माहौल से FLN

श्रीमती चंचल चंद्राकर 93013 54769 प्रधानपाठक,
शासकीय प्राथमिक शाला बोडको (बड़ेसटटी) विकासखंड सुकमा, जिला सुकमा

जब छोटे बच्चे शाला में प्रवेश लेते है उसके पूर्व से ही परिवार के सदस्यों, साथियों के साथ अपने आस पास व अपनी पसंद की सामग्री, खिलौना के प्रिंट, तस्वीर या चित्रों को देख कर इमेजिंग करते हुए बातचीत करते है। अपने आप को व साथी को चित्रों पर रख कर कल्पना करते हुए पहचानने का प्रयास करते है। सुनी हुई बातों को पढ़ने का अभियान करते हैं। जब वे शाला आते हैं तो पूर्व के माहौल को शाला या कक्षा कक्ष में देखना चाहते हैं पर जब उन्हें अपने अनुकूल वातावरण नही दिखता तो शाला उनके लिए उबाऊ लगाने लगता है। शिक्षिका ने शाला में लगे पोस्टर के सामने छोटे बच्चे को अकसर खड़ा हो कर अपने आस पास की चीजों को ढूंढने, सीखते, समझते व पढ़ने का प्रयास करते देखा। बच्चों के इसी मनोभाव को समझ कर शाला में प्रिंट रिच वातावरण तैयार करने का संकल्प लिया। स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए उन्होंने शाला परिसर की दीवालों में किताब की विषयवस्तु के साथ स्थानीय परिवेशीय वस्तुओं के नाम का आकर्षक रंगीन चित्रों बनाया है। एकल शिक्षकीय शाला होने के कारण शिक्षिका ने सहयोग हेतु बच्चों को पेंटिंग सिखाया एवं दीवालों में उन्हें अपनी पसंद की चित्र बनाने का अवसर दिया है। शाला में हर स्तर के

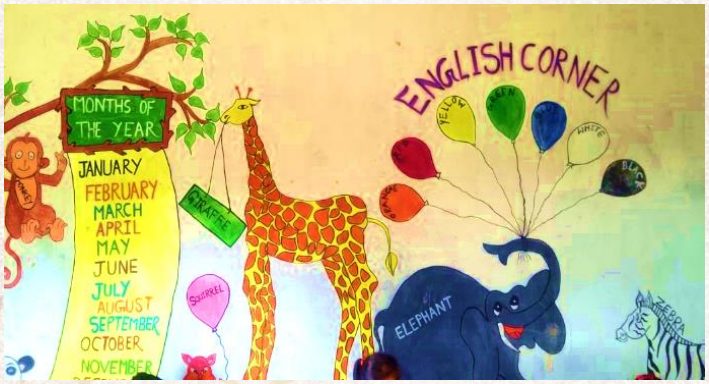

बच्चों के लिए पृथक पृथक चित्रकारी की गई है। छोटी कक्षा के बच्चों के लिए फर्स में वर्णमाला व गिनती बना है। श्रीमती चंचल प्रिंट रिच वातावरण के अपने इस अभिनव प्रयास से बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान की समझ विकसित करने का अनुकरणीय कार्य कर रही है।

एजेंडा 4. विविध गतिविधियों द्वारा गुणवत्ता

विविधता में गुणवत्ता

श्री ओम नारायण शर्मा 6260 009 705 प्रधान पाठक
शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला खट्टा विकासखंड महासमुंद
जिला महासमुंद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बच्चों के समग्र विकास पर विशेष बल देते हुए उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता दी गई है। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर श्री ओम नारायण शर्मा प्रधान पाठक ने अपनी शाला में सहयोगी शिक्षकों को साथ लेकर बच्चों को उनकी आवश्यकता अनुसार अवसर प्रदान करते हुए सिखाने का कार्य कर रहे हैं। इस हेतु उनके द्वारा प्रति दिवस प्रार्थना सभा में राष्ट्रीय व राज गीत के बाद प्रेरक प्रसंग , अभिव्यक्ति कौशल के लिए अलग अलग बच्चों से समाचार वाचन मंच संचालन का कार्य कराया जाता है। कमजोर बच्चों के लिए प्रति दिन अंतिम कालखंड में उपचारात्मक शिक्षण, बच्चों की उपस्थिति नियमित रखने के लिए पालक सम्पर्क, शाला प्रबंध समिति व पालक बैठक एवं खेल का आयोजन, व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक शनिवार को विधुत फिटिंग का कार्य, खूब पढ़ो खूब खेलों के तहत बच्चों को खेलने व अपनी पसंद की किताब पढ़ने के अवसर देना, नवोदय जैसे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराना। शाला में कम्प्यूटर सीखने के अवसर देना। पालकों की बैठक में नशा मुक्ति कार्यक्रम की जानकारी के साथ बच्चों को व्यसनों से दूर रहने के लिए प्रेरक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। प्रधान पाठक के इस तरह के प्रयास से शाला के बच्चों में गुणात्मक सुधार हो रही है।

एजेंडा 5. प्रशिक्षण का उपयोग

श्रीमती हिना कश्यप 8770759258 प्रधान पाठक
शासकीय प्राथमिक शाला डिपोपारा जामपदर कोंडागाँव
जिला कोंडागाँव

प्रधान पाठिका का मानना है जब किसी औजार को लंबे समय तक उपयोग नही किया जाता है एवं उसकी साफ सफाई नही होती है तो उसमें जंग लग जाता है और वह अनुपयोगी भी होने लगता है, इसलिये औजारों की नियमित साफ सफाई आवश्यक है। ताकि वह सक्रिय रहे। इसी तरह से शिक्षक का व्यवसाय भी है। दिन प्रतिदिन ज्ञान विज्ञान में हो रहे परिवर्तन, बच्चों के व्यवहार में बदलाव एवं उनकी आवश्यकता को ध्यान में रख कर शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। ताकि वे समय के साथ अपने आप को अपडेट रख सके। यही कारण है कि प्रति वर्ष विभाग के द्वारा विभिन्न स्तर पर समय समय आवश्यकता अनुसार प्रशिक्षण ऑन लाइन एवं ऑफ लाइन दोनों ही मोड़ में आयोजित की जाती है। श्रीमती कश्यप कहती है कि सिर्फ प्रशिक्षण ले लेना ही महत्वपूर्ण नही है बल्कि प्रशिक्षण के बाद कक्षा कक्ष में बच्चों के साथ उपयोग किया जाना ही प्रशिक्षण की सार्थकता है। हर प्रशिक्षण एक प्रभावी प्रशिक्षण होता है जो हमें कुछ नया सीखने करने के लिए प्रेरित करता है। संकुल बैठक से लेकर राज्य स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण में हमारी शाला के शिक्षक व मैं स्वयं उपस्थित होती हूँ। प्रशिक्षण पश्चात शाला में अन्य शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण के अनुभव को साझा कर कार्ययोजना तैयार कर, हम बच्चों के साथ काम करते है जिसमें प्रशिक्षण के उद्देश्य अनुसार सफलता प्राप्त होती है। मैंने हाल ही में राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा द्वारा आईआईटी गाँधी नगर गुजरात के सहयोग से आयोजित खिलौना आधरित प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जिसमें छोटे बच्चों के लिए खिलौना बनाना सीखा कर खेल खिलौने के माध्यम से पाठ वस्तु को कैसे सहज व सरल रूप से बच्चों को सीखा सकते हैं कि तकनीकी जानकारी दी गई। हमेशा की तरह इस बार भी हमनें अपने प्रशिक्षण के अनुभव को शिक्षकों के साथ साझा कर योजनाबद्ध कार्य किया है बच्चों के साथ मिलकर खिलौना बनाकर खिलौने को अपने अध्यापन में सहायक सामग्री के रूप में उपयोग किया। हमनें पाया कि बच्चों को खिलौना से बहुत लगाव होता है वे पहले की अपेक्षा खेल खेल में बहुत जल्दी सीखते हैं। उनकी सहभागिता भी अधिक रहती है। इसी तरह से हमारी संस्था के शिक्षकों ने प्रिंट रिच वातावरण, पुस्तकालय, बाल साहित्य वर्क बुक पर प्रशिक्षण प्राप्त किया है जिसका उपयोग हमारी शाला में हो रहा है परिणाम स्वरूप प्रशिक्षण का प्रभाव शाला में बच्चों के सीखने के स्तर में वृद्धि होने से प्रत्यक्ष रूप से दिखता है।

एजेंडा 6. संग्रहालय से शिक्षण

पुरखा के सुरता

श्री ओंकार प्रसाद वर्मा 9754175501 प्रधान पाठक
शासकीय प्राथमिक शाला मुंगेशर विकासखंड आरंग
जिला रायपुर

ज्ञान व विज्ञान के प्रयोग से हम चंद्रमा में पहुंचने के बाद अब सूर्य में अपना झंडा फहराने को निकल पड़े हैं। हमारा यह प्रयास भी सफल होगा इसमें कोई संदेह नहीं है। हम शाला में बच्चों को सुई से लेकर रॉकेट एवं कम्प्यूटर से लेकर सुपर कम्प्यूटर तक कि सफलता की कहानी बता कर नए ज्ञान का सृजन कर रहे हैं। जो वर्तमान के लिए आवश्यक भी है। पर आधुनिकता की इस दौर में हमारे बच्चे अपने देश की विशाल समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के ज्ञान से वंचित हो रहे है। हम चाहे कितना भी उन्नति कर ले पर बच्चों को उनके ज्ञान के वर्द्धि के लिए हमारे संस्कृति को बताना, समझाना आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर शासकीय प्राथमिक शाला मुंगेशर जिला रायपुर के प्रधान पाठक ने अपनी शाला के शिक्षकों के साथ मिलकर एवं शाला विकास समिति के सदस्यों व जनप्रतिनिधियों के सहयोग से प्रचीन समय में ग्रामीण परिवेश में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को शाला में दान स्वरूप स्वीकार कर संग्रहालय का निर्माण किया है। जिसे उन्होंने पुरखा के सुरता नाम दिया है। प्रधान पाठक स्वयं ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े हैं। अपने अध्ययन के दौरान उन्होंने अपने शिक्षकों से स्वच्छता, बागवानी, पेन्टिग, बढई, सिलाई, राजमिस्त्री जैसे जीवनुपयोगी सामग्री निर्माण करने का कार्य सीखा है। अपने सीखे हुए हुनर को अब अपने शाला के बच्चों में रोपित कर रहे हैं। प्रधान पाठक का मानना है। हमारी प्रचीन संस्कृति हमें शिक्षा के साथ आत्मसंबल बनना सिखाती है। शिक्षक होने के नाते हम सब की नैतिक जिम्मेदारी हो जाती है कि हम अपनी संस्कृति को संरक्षित कर एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में हस्तांतरित करें। बस मेरा यही प्रयास है। मेरे इस कार्य में शाला के शिक्षक, बच्चे व जन समुदाय का भरपूर सहयोग मिलता। बच्चों को हम पाठ्यक्रम के विषय वस्तु का अध्यापन के दौरान आये हुए प्रसंग का प्रत्यक्ष अवलोकन कराने के लिए सहायक सामग्री के रूप में संग्राहालय की सामग्री का उपयोग करते हैं। जो सामग्री हमारे पास उपलब्ध नही होती है उसे बच्चों के साथ मिलकर बनाते है। बच्चों को सीखने का भरपूर अवसर देते है। शाला की स्वच्छता व बागवानी का कार्य बच्चों की बाल कैबीनेट द्वारा तय किया जा है। इस प्रकार से शाला में बुनियादी साक्षरता व संख्यात्मक ज्ञान के लक्ष्य पूर्ति के लिए बच्चों के साथ कार्य किया जा रहा है।

एजेंडा 7. बहुकक्षा शिक्षण की तकनीक

श्री सूरज चंद्रवंशी 7697057978 प्रधान पाठक
शासकीय प्राथमिक शाला बड़े पारा कुरन्दी
विकासखण्ड जगदलपुर जिला बस्तर

अकसर माना जाता है शिक्षकों की संख्या से ही शाला में गुणवत्ता निर्धारित होती है। जिन शालाओं में शिक्षकों की संख्या अधिक होती है वहां बच्चों का स्तर काफी ऊपर होता है एवं जहाँ शिक्षकों की कमी होती है वहां गुणवत्ता अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। ऐसा मान या समझ लेना हमारी भूल होगी । श्री सूरज चंद्रवंशी की बहुकक्षा तकनीक हमारे इस दृष्टिकोण को बदलने की वकालत करता है। शिक्षक छत्तीसगढ़ के ऐसे पिछले वन क्षेत्र में कार्यरत है जहाँ पर शिक्षकों की पदस्थापना तो होती है, पर वे आधुनिक चाकचौक से प्रभावित हो कर बीहड़ क्षेत्र में काम करने से कतराते है । ऐसे में शिक्षक बस्तर के अंदरूनी इलाके में शिक्षक बच्चों के बीच ज्ञान का दीपक जला रहे हैं । लंबे समय तक एकल शिक्षकीय व्यवस्था में काम करते रहने के कारण शिक्षक ने शाला के बच्चों और अपने संघर्ष को ही अपना प्रेरणा मान लिया है। वे शिक्षकीय कौम में हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत है। जो करना है स्वयं को करना है बच्चों के लिए ही करना है के सिद्धान्त पर शिक्षक अपनी शाला में बहुकक्षा का एक अनुपम उदाहरण पेश करते हुए काम कर रहे हैं । इन्होंने सर्वप्रथम अपनी शाला में बच्चों के लिए प्रिंट रिच वातावरण के लिए पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को शाला के कक्ष व परिसर में उकेर कर बच्चों को पढ़ने का अवसर मुहैया कराया है। कमजोर बच्चों को साथ लेकर चलाने व आगे बढ़ने के लिए पियर व ग्रुप लर्निंग पर काम करते हैं। शाला में गतिविधि कक्ष, खिलौना कार्नर, पुस्तकालय, संग्रहालय निर्माण कर बच्चों की अभिव्यक्ति कौशल के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं । लोकल कहानी स्थानीय भाषा के माध्यम से अध्यापन कार्य एवं प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर गणितीय संक्रियाओं का सहज व्यवहारिक ज्ञान देकर बच्चों को स्वयं करने के अवसर देकर गणित व भाषा में एफ एल एन में दक्ष बनाने में पीछे नही है। इनकी यह बहुकक्षा तकनीक सबके लिए एक प्रेरणादायक कार्य है।

एजेंडा 8. पूरे गाँव को ही बनाया प्रिंट रिच

श्री ननकी राम चंद्रा 9131900615 प्रधान पाठक
शासकीय प्राथमिक शाला बोजिया विकासखंड धरमजयगढ़
जिला रायगढ़

अधिकांश लोगों का मानना है कि बच्चे शाला में रह कर ही पढ़ना लिखना सीखते हैं । शाला समय के बाद उनका पढ़ाई लिखाई से कोई वास्ता नहीं होता है। बच्चे अपने सहपाठियों के साथ खेलकूद में अपना समय व्यतीत करते है। बच्चों को शाला समय के बाद भी अध्ययन अध्यायपन से जोड़े रखने व सीखने सिखाने का अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो निश्चित ही बच्चों में पढ़ने की प्रति सकारात्मक जुड़ाव देखा जा सकता है। इसी बात पर गहन चिंतन कर शासकीय प्राथमिक शाला बोजिया के प्रधान पाठक श्री ननकी राम चंद्रा ने अपने शाला ग्राम के मकानों के दीवालों पर प्रिंट रिच वातावरण तैयार कर बच्चों को पढ़ने का अवसर उपलब्ध कराया है । इनका मानना है बच्चे हमेशा शाला आते-जाते समय ग्राम के घरों दीवाल व दुकानों में लिखी, छपी हुई प्रिंट को पढ़ने की कोशिश करतें है । शाला में सीखी हुए बात से जोड़ कर, अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं । स्वयं से कल्पना करते और पढ़ने का प्रयास करते है। पढ़ने के प्रति बच्चों की इन्हीं ललक को देखर मुझे प्रेरणा मिली कि मैं इन्हें शाला के बाहर भी पढ़ने क वातावरण उपलब्ध करा सकूं । इस संबंध में मैंने पालकों व ग्रामीणजनों से चर्चा किया उनसे सहमति व सहयोग लेकर गाँव में शाला आने -जाने के रास्ते, चौक चौराहे एवं विशेषकर जिस स्थान पर बच्चे खेलते है उस जगह की दीवाल पर पाठ के कंटेंट एवं चित्रों को प्रिंट करा कर बच्चों को पढ़ने का अवसर दिया । बच्चे सीखी हुए बातों को अपने आस पास की दीवालों खोज कर समझ विकसित करने का प्रयास करते हैं। परिवार जनों व साथियों की सहायता से पढ़ते है। इस तरह से हम बच्चों को अवसर प्रदान कर उन्हें स्वतंत्र पाठक बनाने का अवसर दे रहे हैं। बच्चों के पढ़ने की रुचि बढ़ने से शाला में एफ एल एन के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमें सहायता मिल रही है।

एजेंडा 9. अंग्रेजी शिक्षण की सरल तकनीक

श्री महेंद्र बोर्झा 9406233511 प्रधान पाठक

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बोड़रा विकासखंड नगरी

जिला धमतरी

बच्चों को बहु भाषा सीखने के अवसर देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा का प्रावधान किया गया है। हमारे राज्य की यह व्यवस्था पूर्व से ही है। अपनी मूल भाषा के अलावा शालाओं में संस्कृत व अंग्रेजी भाषा का अध्यापन कार्य कराया जाता है। शासकीय शालाओं में अधिकतर देखा गया है कि शिक्षक बच्चों को अंग्रेजी सिखाना कम सिर्फ परीक्षा पास करने की तैयारी कराते हैं।

श्री महेंद्र बोर्झा भी उन्हीं छात्रों में से एक है जिन्हें उनके शिक्षकों ने सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए अंग्रेजी सिखाया था। श्री बोर्झा को अपने छात्रजीवन में अंग्रेजी नही सीख पाए थे जिसकी पीड़ा हमेशा उन्हें सताती थी। यही कारण है कि जब वे अध्यापक बने और अब प्रधान अध्यापक ही गए हैं। वे जिस भी विद्यालय में रहें हैं अपने बच्चों को वर्तमान में अंग्रेजी भाषा की आवश्यकता व महत्व का बोध कराते हुए अंग्रेजी का अध्यापन कार्य करते है। उन्हें उनकी अंग्रेजी शिक्षण शिक्षण की तकनीक के कारण अंग्रेजी के जुनूनी शिक्षक के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने सबसे पहले यू ट्यूब से अंग्रेजी को सरल से सरल रूप में कैसे पढ़ाया जाता है कि तकनीक को सीखा और अब वे अपनी स्वयं की अंग्रेजी सीखने की नवीनतम तकनीक इजाद किया है। यू ट्यूब पर वे अंग्रेजी सिखाने के लिए सौ से अधिक वीडियो अपलोड किया है जिसका लाभ राज्य के विद्यार्थी के साथ साथ शिक्षक भी ले रहे हैं।

इनका मानना है जब लॉकडाउन में सीखने की गति थम सी गई थी तब मैंने चुनौती को अवसर में बदलने का प्रयास किया। विद्यार्थियों की पढाई में विशेषकर ग्रामीण बच्चों को मोबाइल का सदुपयोग करने व यू ट्यूब से अंग्रेजी सीखने के अवसर प्रदान किया। बच्चों के लिए 'सुन कर अंग्रेजी सीखें', 'वाक्य को बदलें, स्वयं अभ्यास करें', 'कक्षा अध्यापन के माध्यम से अंग्रेजी सीखें', 'आसान तरीके से अंग्रेजी पढ़ें', 'स्वर और व्यंजन को आसान तरीके में सीखें', 'My Mom at My School', 'परिचयात्मक वाक्य को अंग्रेजी में अनुवाद करें', 'Wh प्रश्न का अंग्रेजी प्रश्नकर्ता बच्चेउत्तर दाता बच्चे-', 'शब्दालंकार को एक ही बार में सीखें', 'वर्ण व वर्ण के प्रकार', '0 से शून्य से अंग्रेजी की शुरुआत', 'Helping Verb', 'अंग्रेजी में संयुक्त अक्षर बनाना', 'सुनकर दोहराओ', 'कभी न भूलेंगे वर्णमाला', 'र को कब कहाँ कैसे लिखें', 'स को कब कहाँ कैसे पढ़ें', इत्यादि छोटे छोटे गतिविधियों-का युट्यूब वीडियो बनाया है जिससे माध्यम से वे अंग्रेजी सीख रहे हैं।

श्री महेंद्र बोर्झा अपने ख़ास मुहीम में अंग्रेजी शिक्षा को सहज, सरल एवं रचनात्मक बनाने के साथ साथ भाषाई-बारीकियां, सामुदायिक सहभागिता, पर्यावरण संरक्षण, बागवानी, मातृपितृ पूजन-, विज्ञान एवं बाल मेला, बच्चों के संग होली, जम्मू कश्मीर के वीर जवानों को समर्पित-देशभक्ति, वार्षिक उत्सव, प्रकृति शैक्षणिक भ्रमण, स्वच्छता रैली, पर्व उत्सव आदि आयोजनों से निर्बाध गति से अपने-शैक्षणिक दायित्वों का सृजनात्मक निर्वहन कर रहे हैं।

एजेंडा 10. अनुशासन से शिक्षा

श्रीमती मौरिन सैम्युएल 9826992063 प्रधान पाठक

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परसदा

विकासखंड बिल्हा जिला बिलासपुर

शिक्षा का अपना व्यापक अर्थ है: शाला में विद्यार्थी विविध गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना लिखना सीख कर सफलता प्राप्त करते है । वर्तमान परिपेक्ष में सिर्फ पढ़ लिख कर अच्छे अंक प्राप्त कर लेना ही ज्ञान अर्जित करना नहीं है और यह शिक्षा का ध्येय भी नही है । बल्कि शिक्षा अपने व्यापक अर्थ में बालक को राष्ट्र के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है। बच्चों को आत्म निर्भर जिम्मेदारी नागरिक बनाने के लिये शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परसदा की प्रधान पाठिका श्रीमती मौरिन सैम्युएल ने अपनी शाला में बच्चों के साथ अनूठा कार्य कर रही है। इनका मानना है जीवन में सफलता का मूल मंत्र अनुशासन है देश दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए है उन सबकी सफलता की सिर्फ एक ही कहानी है और वह है अनुशासन। हर जगह, हर समय, हर काम में अनुशासन की महती भूमिका होती है । हम अनुशासित रहकर पढ़ाई के साथ समन्वय कर जीवन की हर कठिनाई को आसानी से पार कर सकते हैं। अपनी शाला में ग्यारह सदस्यीय शिक्षकों के टीम के साथ प्रतिदिन बैठक आयोजित कर, बच्चों की समस्याओं पर विचार विमर्श कर समाधान करती है। नियमित शाला में समय पर शिक्षकों की उपस्थित से बच्चों की भी उपस्थिति बढ़ी हैं । प्रार्थना सभा बाल सभा में प्रत्येक बच्चों की सहभागिता निर्धारित कर, पृथक पृथक जिम्मेदारी देकर उन्हें अपने कर्तव्य बोध का ज्ञान कराती हैं। खेल, व्यायाम साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन से सामाजिक दायित्व की भावना उत्पन्न करने का अवसर देकर बच्चों को उनकी काबिलियत उभारने का प्रयास करती है। स्थानीय कामगारों को शाला में आमंत्रित कर एवं आवश्यकता अनुसार प्रत्यक्ष भ्रमण कराकर पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के हुनर को सीखने का प्रत्यक्ष मौका देकर उन्हें जीवन उपयोगी कार्य सीखने के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिए सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों के आयोजन से आत्म विश्वास, अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि होने से बच्चों की रुचि पढ़ने में लगती है । उन्हें अपने कर्तव्य बोध का अहसास होता है और वे एक जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। श्रीमती मौरिन का कहना है कि वह अपने सहकर्मियों व जन प्रतिनिधियों के सहयोग से कार्य करने में आत्म सन्तुष्टि मिलती है। हमारी शाला से निकले बहुत से बच्चे भारतीय सेना में शामिल हो कर सीखे हुए अनुशासन का परिचय देते हुए देश की रक्षा में लगे है और शाला, ग्राम, प्रदेश देश का मान बढ़ा रहे है।

चर्चा के विषय

1. *संकुल बैठक में बेहतर कार्य करने वाले संस्था प्रमुखों के अनुभव की चर्चा करें।*
2. *नेतृत्व क्षमता विकसित करने हेतु अपने संकुल के संस्था प्रमुखों के साथ मिलकर कार्ययोजना बनावें।*
3. *आपके संकुल में अनुकरणीय कार्य कर रहे संस्था प्रमुखों की सूची तैयार कर हमें उपलब्ध करावें ।*